1857 के विद्रोह के कारण

E-CONTENT

(FOR THE STUDENTS OF BA SEMESTER 6TH, MA SEMESTER 3RD AND 4TH)

- प्रो. अरुण कुमार सिंह

इतिहास विभाग

डी.ए.वी. पी.जी. कॉलेज, आजमगढ़, उत्तर प्रदेश -276001

ई-मेल आईडी: arunnsingh99@gmail.com

मोबाइल नंबर: 8318225375

ए० आर० देसाई (भारतीय राष्ट्रवाद की सामाजिक पृष्ठभूमि) विद्रोह के कारणों की चर्चा करते हुये ए० आर० देसाई ने लिखा है कि 1857 का विद्रोह उन पुराने भारतीय समाज के विभिन्न वर्गों के जमा असंतोष का परिणाम था जो भारत पर ब्रिटिश विजय प्रभावित हुआ था। उन नई आर्थिक, शक्तियों और पद्धतियों का भी परिणाम था जो इस विजय से अस्तित्व मे आयी थी और उन अनेक समाज सुधारों से भी जो ब्रिटिश सरकार ने इस देश मे लागू की थी।

K.K. दत्ता के अनुसार - विद्रोह बहुत सी हुई स्थितियों का परिणाम था और इसके कारण मुख्यतया शोषक पालिसी वाले थे कि आर्थिक एवं सामाजिक, धार्मिक तथा सैनिक मे बांटे जा सकते हैं।

राजनैतिक कारण

· 1857 के विद्रोह का सबसे प्रमुख राजनैतिक कारण भारतीय नरेशों का स्वयं को असुरक्षित महसूस करना था।

· भारतीय नरेशों के राज्यों के अन्त का प्रभाव केवल उनपर ही नही पड़ा था बल्कि उनपर आश्रित सामन्तों, सैनिकों और शिल्पियों पर भी पड़ा था।

· डलहौजी की राज्य व्यपगत नीति भारत के सभी राज्यों के ऊपर तलवार की तरह से लटक रही थी, वे राज्य जो ब्रिटिश राज्य मे अभी नही मिलाये गये थे उनमें भी यह भय व्याप्त था कि उनका राज्य कभी भी ब्रिटिश राज्य मे मिलाया जा सकता है।

· भारत के मुस्लिम ब्रिटिश शासन से विशेषकर असंतुष्ट थे क्योंकि अंग्रेजों ने लगातार उनकी भावनाएं आहत की थी।

· भारत के अंतिम मुगल बादशाह के उनके परम्परागत आवास लाल किले से हटाने की कोशिश और 1856 मे अवध के अधिग्रहण ने भारत के मुसलमानों को उग्र कर क्षुब्ध किया था और उन्हें पहली बार बहुत गहराई से यह महसूस हो रहा था कि भारत मे उनका सूर्य वास्तव मे डूब चुका है।

· पेशवा बाजीराव द्वितीय के दत्तक पुत्र नाना साहब को उनका उत्तराधिकारी न मानना और उनकी पेंशन बंद करने से मराठे भी अंग्रेजी शासन के खिलाफ हो गये थे।

आर्थिक एवं सामाजिक कारण

· 18वीं सदी के उत्तरार्द्ध से ही भारतीय कुटीर उद्योगों का विनाश प्रारम्भ हो गया था और 19वीं सदी के पूर्वार्द्ध मे भारत के आर्थिक शोषण की प्रक्रिया बिल्कुल स्पष्ट हो गयी थी।

· भारत के लघु उद्योग लगभग लुप्त हो चुके थे, यहां की निर्धनता मे बहुत तेजी से वृद्धि होती जा रही थी।

· भारतीय व्यापार एवं वाणिज्य पर पूरी तरह से अंग्रेजी प्रशासनिक नियंत्रण स्थापित हो चुका था और मुक्त व्यापार के सिद्धान्त का सहारा लेकर भारतीय व्यापार और उद्योग को कोई संरक्षण प्रदान नही किया जा रहा था।

· अंग्रेजी भू-राजस्व व्यवस्था और न्याय व्यवस्था ने भी भारतीय समाज पर गहरा असर डाला। अंग्रेजों द्वारा स्थापित भू-राजस्व व्यवस्था भारत की प्राचीन व्यवस्था को पूरी तरह से बदल देने का प्रस्ताव था।

· एक रिकॉर्ड के अनुसार नई भू-राजस्व व्यवस्था के खिलाफ अकेले मद्रास मे रैयतों की ओर से 15 हजार से ज्यादा अर्जियां दी गयी थी।

· अंग्रेजों ने पुरानी कर-मुक्त भूमि को अपने नियंत्रण मे ले लिया जिससे काफी बड़ी संख्या मे सम्मानित व्यक्तियों को आजीविका की तलाश मे भटकना पड़ा। 1852 मे इनाम आयोग द्वारा हजारों जमींदारों की भूमि शासन द्वारा छीन ली गयी।

· इस प्रकार अंग्रेजी आर्थिक नीतियों से किसान, शिल्पी, जमींदार, व्यापारी सभी वर्ग दुखी थे।

· अंग्रेजों ने कर वसूलने के लिये भारतीय जनता पर बेहद जुल्म ढाये, उनसे भी बलपूर्वक पैसा वसूला गया जिनके पास खाने को कुछ नही था। कभी-कभी अमानवीयता हास्यास्पदता की सीमा लांघ जाती थी।

· जब एक अंग्रेज कलेक्टर ने सरकार को बार-बार लिखा कि वह अपने इलाके मे इसलिये वसूली नही कर सकता क्योंकि वहां सिवाय घास के कुछ भी पैदा नही हुआ है, तो उसे सरकार की तरफ से निर्देश मिला "घास अच्छी चीज है, उसी को बिकवाकर टैक्स वसूलिये" ।

· भारत मे समय-समय पर लागू किये गये समाज सुधारों पर भी घनघोर प्रतिक्रिया हुई। सती प्रथा की समाप्ति, बाल विवाह पर रोक सरकारी कानून भारतीय जनता के आन्तरिक मामलों मे हस्तक्षेप माने गये इसने भी ब्रिटिश राज का विरोध बढाया।

धार्मिक कारण

· समाज सुधारों और पाश्चात्य शिक्षा पद्धति ने धार्मिक भावनाओं को भी आघात पहुँचाया। सरकार की नीयत के बारे मे लोगों को पहले से संदेह था और भारत मे व्यापक तौर पर माना जाता था कि अंग्रेज जो भी कार्य कर रहे हैं उनका मकसद भारतीय जनता को ईसाई बनाना है।

परसीवल स्पियर लिखता है -- दोनों धर्मों के कट्टर लोग ब्रिटिश शासन से दूर हो गये क्योंकि अंग्रेजी भाषा का प्रचार संस्कृत और अरबी के लिये घातक था और इससे ईसाइयत का प्रचार होता था शैतान का काम था। और रेल यातायात जाति प्रथा पर धक्का थी। भारत के कट्टर लोग यह समझे कि सरकार स्पष्ट रूप से ईसाई धर्म का प्रचार कर रही है।

सर सैय्यद अहमद खां अपनी पुस्तक 'असबाब बगावत-ए-हिंद' मे लिखते हैं कि --

· मिशनरी स्कूलों के बच्चों द्वारा भारतीय धर्मों की खुली आलोचना की जाती थी।

· सरकारी स्कूलों मे बाइबिल की शिक्षा अनिवार्य थी और जनता को ईसाई धर्म की सर्वोच्चता के बारे मे बताया जाता था।

· अकाल पीड़ितों, बंदियों, विधवाओं और अनाथों को बल पूर्वक ईसाई बना लिया जाता था।

· सरकारी अधिकारियों द्वारा भी एक ही धर्म की प्रधानता की वकालत की जाती थी और भारत के हिन्दुओं मुसलमानों को संदेह था।

...कि सरकार उन्हें येन-केन-प्रकारेण ईसाई बनाना चाहती है। अंग्रेजों ने भारतीयों में व्यापक रूप से फैली इस धारणा का अन्त करने का कोई प्रयास नहीं किया। यहां यह प्रश्न उठना स्वाभाविक है कि सामाजिक प्रतिष्ठा और आर्थिक स्थायित्व को ठोकर मार कर सिपाहियों ने विद्रोह कर के एक अनिश्चित भविष्य का खतरा क्यों मोल लिया? दिल्ली में विद्रोही सिपाहियों की मुनादी इस प्रश्न का स्पष्ट उत्तर देती है। "सब जानते हैं कि अंग्रेजों ने इन दिनों में क्या-क्या गदर किये हैं। पहले तो उन्होंने सारी हिन्दुस्तानी

सेना का धर्म भ्रष्ट किया और फिर लोगों को अनिवार्य रूप से ईसाई बनने को मजबूर किया, इसलिये हम पूरी तरह अपने धर्म पर कायम रहते हुये लोगों के साथ एक जुट हुए हैं। और इस बुनियाद पर हमने दिल्ली का शासन फिर से स्थापित किया है।"

सैनिक कारण

भारतीय सेना में अनेकों कारणों से घोर असंतोष व्याप्त था, सारे उच्च पद केवल अंग्रेजों के लिये आरक्षित थे और कोई भारतीय सिपाही अधिकारी की श्रेणी में नहीं पहुँच सकता था। प्रतिभा को पूर्ण रूप से उपेक्षित कर केवल वरिष्ठता से ही पदोन्नति दी जाती थी। सैनिक नागरिक स्थानों पर अपनी नियुक्ति को भी पसन्द नहीं करते थे। उन्हें अपने अधिकारियों के घरों में घरेलू नौकरों की तरह कार्य करना भी स्वीकार नहीं था। अंग्रेजों की विस्तारवादी नीति से भी सैनिक असन्तुष्ट थे। क्योंकि अंग्रेजी राज्य की सीमाएं बढ़ने से सैनिकों की सुदूर स्थानों पर नियुक्ति हो जाती थी।

अपनी जाति भ्रष्ट हो जाने के ढंग से वे समुद्र यात्रा से भी कतराते थे। क्योंकि अंग्रेजी कानून के अन्तर्गत सारी दुनिया में उन्हें नौकरी करनी पड़ती थी। उन्हें सैनिक कार्य निर्मित General Services Enlistment Act से भी परेशानी थी क्योंकि इस कानून के द्वारा उन्हें किसी भी स्थान पर सैनिक सेवा करने के लिये बाध्य किया जा सकता था। अंग्रेजी सैनिकों और देशी सैनिकों का स्तर एक होते हुये भी उनकी तनख्वाहों में फर्क होता था जिससे भी सेना में असंतोष था। अंग्रेजी सैनिकों की संख्या भारतीय सैनिकों की तुलना में 1/6 ही थी लेकिन सैनिक खर्च का आधा हिस्सा उन्हें ही मिलता था जिससे भी सेना में घोर असंतोष था।(J.A.B. PALMER - The mutiny outbreak at Meerut)

विद्रोह की असफलता के कारण

1. विद्रोह की असफलता का प्रमुख कारण उत्तर भारत के कुछ स्थानों को छोड़कर अन्य किसी स्थान पर उसे व्यापक जनसमर्थन न मिलना था। भारतीय जनता के विभिन्न वर्ग या तो इस विद्रोह से उदास रहे या फिर उन्होंने अंग्रेजों का सक्रिय समर्थन किया। कुछ सम्मानित अपवादों को छोड़कर अधिकांश भारतीय शासकों, जागीरदारों, जमींदारों ने अपने भविष्य की सुरक्षा अंग्रेजों का साथ देने में देखी। भारत के सम्पन्न व्यवसायी और शिक्षित मध्य वर्ग इस विद्रोह में अंग्रेजों के साथ रहे। लगभग आधे भारतीय सिपाहियों ने न केवल विद्रोह किया बल्कि उसे कुचलने में अंग्रेजों का साथ दिया।

विद्रोह की असफलता का एक प्रमुख कारण उनका नेतृत्व भी रहा। रानी लक्ष्मीबाई, कुंवर सिंह, मौलवी अहमदुल्ला जैसे अपवादों को छोड़कर विद्रोहियों को अपने नेताओं से कोई खास मदद नहीं मिली। नेतृत्व वर्ग न तो विद्रोह के महत्व को समझ पाया और न ही अवसर के अनुरूप कार्य कर पाया।

बहादुरशाह द्वितीय और जीनत महल को सिपाहियों पर भरोसा नहीं था। ज्यादातर ताल्लुकदारों को महज अपने हितों से मतलब था और कुछ बड़े ताल्लुकदारों जमींदारों ने तो अवसर देखकर कई-कई बार अपनी वफादारियां बदलीं। विद्रोह के नेतागण अपने विचारों में बड़े संकीर्ण थे और उनमें आपस में कोई योजनाबद्ध समन्वय नहीं था। उनके पास न तो राजनैतिक दृष्टि थी और न ही भविष्य का कोई साफ नक्शा। वे सब अपने अतीत के कैदी थे और मूलतः अपने विशेषाधिकारों की प्राप्ति के लिये लड़ रहे थे। फलस्वरूप किसी राजनैतिक व्यवस्था कायम करने की उनमें क्षमता नहीं थी। ऐसी स्थिति में यह आश्चर्यजनक नहीं था कि वे एक क्रांतिकारी नेतृत्व नहीं दे सके। जान लारेन्स ने लिखा है कि अगर विद्रोहियों में एक भी योग्य नेता निकला होता तो हम सदा के लिये हार जाते।

1. विद्रोहियों ने एक वर्ष से भी अधिक समय तक अनेकों कठिनाइयों और अभावों के बीच अपना संघर्ष जारी रखा लेकिन उनके पास नये हथियारों और गोला बारूद का कोई स्रोत नहीं था, उनका सामना एक ऐसे शत्रु से था जिसके पास आधुनिकतम शस्त्रास्त्र थे, जबकि भारतीय सेना के पास सामान्यतः वही हथियार थे जो उन्होंने ब्रिटिश अस्त्र शस्त्र के गोदामों से प्राप्त किया था। संचार के उन्नत साधनों का उपयोग भी अंग्रेज उनके खिलाफ ज्यादा आसानी से कर सके। वे अपनी ही देशवासियों की शक्ति और कमजोरी दोनों के ही बारे में नहीं जानते थे। परिणाम स्वरूप मुसीबत के समय वे एक दूसरे की मदद नहीं कर सके और उन्हें अपनी लड़ाई अकेले लड़नी पड़ी। विद्रोहियों द्वारा सरकारी सम्पत्ति के बिना सोचे समझे विनाश ने भी न केवल उन्हें उनके उपयोग से वंचित कर दिया बल्कि उन्हें आम जनता से भी दूर कर दिया।

परसीवल स्पियर - (भारत का इतिहास भाग 2) ने लिखा है कि अंग्रेजों के जीतने का कारण यह था कि उनके हाथ में सारे कार्ड थे। अपनी सम्पदा और संगठन के बल पर अंग्रेज भारतीयों पर भारी पड़ते थे। कूटनीति में भी भारतीयों का कोई मुकाबला नहीं था, अभी कुछ ही समय पहले अंग्रेजों ने सिक्खों को पराजित किया था। लेकिन सिक्खों ने इस विद्रोह...

...में अंग्रेजों का साथ दिया। उत्तर पश्चिमी सीमा प्रान्त की पठानी जातियां जिनसे कुछ समय पहले अंग्रेजों ने भीषण संघर्ष किया था, अंग्रेजों की सेना में भर्ती हो गयीं। सिन्धिया तक जिसके साथ लार्ड एलनबरो ने बहुत बुरा सुलूक किया था, इस विद्रोह के दौरान तटस्थ हो गया। जिस निजाम को बरार देने को अंग्रेजों ने जालसाजी से मजबूर किया था, उसने भी अंग्रेजों का साथ दिया।

इन्हीं कारणों से R.C. मजूमदार लिखते हैं कि एक ऐसी जाति जो बाफल ताल्लुक देशी सैनिकों को सिक्खों के खिलाफ और फिर सिक्खों को देशी सैनिकों के खिलाफ, देशी सैनिकों को पठानों और गोरखों

के खिलाफ और फिर पठानों और गोरखों को देशी सैनिकों के खिलाफ इस्तेमाल कर सकती थी वह निश्चय ही एक साम्राज्य की स्थापना कर सकती थी।

परसीवल स्पियर ने इस विद्रोह की असफलता का एक और कारण बताया है वे लिखते हैं कि इस विद्रोह में नैतिक तत्व अंग्रेजों की ओर थे। वे अपने शासन करने के अधिकार में विश्वास करते थे। भारत पर राज्य करना उनका ध्येय था। राष्ट्रोचित अभिमान अपनी चरम सीमा पर था। युद्ध में मृत्यु से मनुष्य अतिमानव की श्रेणी में आ जाता था। वे अपने जमाने के धर्म-निरपेक्ष धर्म के शहीद थे। लेकिन विद्रोहियों को न तो अपने पर और न ही अपने ध्येय पर विश्वास था वे कुछ अनजाने ध्येय से लड़ रहे थे कुछ नया कर गुजरने का उनका कोई विचार नहीं था। उनका एक मात्र उद्देश्य अपनी पुरानी खोई हुई सत्ता वापस पाना था यदि वे विजयी भी होते तो आपस में ही लड़ गए होते। भ्रम और दुविधा की इस स्थिति में वे उठे, लड़े, डरे तड़पे और मारे गये लेकिन उनकी मौत बेकार नहीं गयी उनकी असफलता ने भारतीयों को यह बता दिया कि पुराना जमाना अब लौट नहीं सकता और भविष्य में पश्चिम की प्रगतिशील शक्तियों से समझौता करना ही पड़ेगा। 1857 के संघर्ष में विजय न तो मुगलों के हाथ लगी न मराठों के और न ही अंग्रेजी कम्पनी के, वास्तविक विजेता तो पाश्चात्य विचार और भावनाएं थीं।

1857 के विद्रोह के परिणाम

1. 1857 के विद्रोह का तात्कालिक परिणाम यह निकला कि भारत सरकार का प्रशासन ईस्ट इण्डिया कम्पनी के हाथों से निकल कर ब्रिटिश राजमुकुट के हाथों में आ गया। जिसका सीधा तात्पर्य था कानूनी एवं वास्तविक दोनों दृष्टियों से भारत में मुग़ल शासन का अन्त।

2. मुग़ल बादशाहत की समाप्ति से भारत के मुसलमानों में निराशा की भावना भड़की अंग्रेजों ने भी इस विद्रोह को मुस्लिम विद्रोह की संज्ञा दी जिसके कारण भारतीय शासन का मुसलमानों के प्रति भाव शंका का रहा।

3. आधुनिक भारत का आर्थिक इतिहास विद्रोह के बाद शुरू होता है बजाय एक कम्पनी के शोषण का केन्द्र बने रहने से भारत अब ब्रिटिश राज्य के शोषण का केन्द्र बन गया। उत्तर विद्रोही काल में ब्रिटिश साम्राज्यवाद के लिये अब पूँजी लगाने के लिये स्वर्ण युग था। भारत का धन ब्रिटिश संसद के हाथों में आने के बाद, इंग्लैण्ड से आर्थिक मामलों के लिये अब भारत आने लगे भारत में पहली बार वार्षिक बजट, आयकर सभी आयातों पर 10% का सीमा शुल्क तथा कागजी मुद्रा का व्यापक चलन प्रारम्भ हुआ। भारत सरकार को इंग्लैण्ड के उपदेशों से इंग्लैण्ड के पूँजी बाजार से पैसा उधार लेने की अनुमति मिली।

4. देशी नरेशों के प्रति नीति में भी परिवर्तन हुआ चूँकि रजवाड़ों के प्रति भी कड़ा लेने की नीति ने विद्रोह भड़काया इसलिये भारतीय रजवाड़ों को गोद लेने की अनुमति दी गयी और उनके बचे खुचे जागीरों को उनके पारम्परिक शासकों के हाथों में बने रहने देने की गारण्टी दी गयी। इसी के साथ ही पूरे देश पर ब्रिटिश आधिपत्य की औपचारिक घोषणा कर दी गयी विद्रोह के पहले का गवर्नर जनरल डलहौजी भारतीय रजवाड़ों को बीते हुये जमाने की बीती हुई चीजें कहा करता था। लेकिन विद्रोह के दौरान और उसके बाद के गर्वनर जनरल कैनिंग ने भारतीय रजवाड़ों को तूफान की प्रतिरोधक शक्ति माना।

5. यह नितान्त स्वाभाविक था कि ब्रिटिश राज देशी सैनिकों को सैनिक दृष्टि से कमजोर और नीरिह बनाने की कोशिश विद्रोह के बाद करता, भारतीय सेना को अब पुर्नसंगठित किया गया सेना में ब्रिटिश सैनिकों का अनुपात बढ़ा दिया गया और तोपखाना उनके लिये सुरक्षित कर दिया गया। किसी भी प्रकार की राष्ट्रीय भावना को प्रारम्भ से ही कुचल देने की नीति अपनायी गयी सैनिकों को समाचार पत्र पढ़ने से रोक दिया गया और नागरिकों को भी हथियार रखने की मनाही कर दी गयी।

6. विद्रोह के बाद ब्रिटिश नौकरशाही के रूप में भी परिवर्तन आया भारत सरकार का सारा काम काज एक सुसंगठित एवं दक्ष नौकरशाही ने ले लिया। इस नौकरशाही ने भारतीय समस्याओं को अँग्रेजी स्वार्थ की नजर से देखा उसने भविष्य की कोई योजना बनाने की बजाय पिछली भूलों पर अपना ध्यान केंद्रित किया भारतीय शिक्षित मध्यवर्ग के विचारों की भी इसने उपेक्षा की। नौकरशाही की यह नीति कालान्तर में राष्ट्रीय आन्दोलन के उदय के प्रमुख कारणों में से एक कारण बनी।

7. विद्रोह ने शासकों और शासितों के बीच एक प्रकार की अविश्वास की भावना पैदा कर दिया दोनों पक्षों द्वारा किये गये ज्यातियों के सनी गलत किस्से दोनों पक्षों के राष्ट्रीय सम्बुद्धि का अंग बन गये। भारत की सामान्य जनता की उपेक्षा कर जान बूझकर ब्रिटिश सरकार ने देश के कुलीन वर्ग को प्रोत्साहित किया। 1876 का रायल टाइटिल्स एक्ट जिसके द्वारा इंग्लैण्ड की महारानी विक्टोरिया को भारत की सम्राज्ञी घोषित किया गया था इस नयी नीति की शुरुआत थी। भारतीय कुलीन वर्ग को भी तरह-तरह की उपाधियां दी गयी इस नई नीति से स्पष्ट हो गया कि ब्रिटिश साम्राज्य भारतीय कुलीन तंत्र की आसाओ आकांक्षाओ, सहानुभूतियों और हितों का जीवन्त प्रतिरूपी है। देशी शासकों और अन्य कुलीनों के अधिकारों को प्रोत्साहन दिया और उन्हें उन्हीं की जनता के खिलाफ अपने पक्ष में मिला लिया।